बिटिया की कहानी

जननाट्य मंच दिल्ली ने "औरत" नाटक औरत के जीवन के खास-खास पहलुओं को लेकर बनाया है। यहां हम उस के बचपन की एक झांकी दे रहे हैं।

गोलाकार अभिनय-स्थल। सात अभिनेता (कम भी हो सकते हैं) एक दूसरे के कंधों पर हाथ रखकर गोलाकार रचना में घूमते हुए एक तरफ से मंच पर आते हैं। इनके बीच में एक छिपी हुई अभिनेत्री है। मंच के बीचोंबीच आकर रुकते हैं। एक साथ पलटकर दर्शकों की तरफ मुंह करके बैठते हैं। अभिनेत्री बीच में खड़ी दिखाई देती है। अभिनेत्री—"मैं एक मां, एक बहन, एक औरत हूं, एक बेटी हूं जो न जाने कब से...।

सुत्रधार : आइए आपको एक कहानी सुनाएं, छोटी सी कहानी। छोटी सी बिटिया की छोटी सी कहानी।

औरत : छोटे अ से अनार, बड़े आ से आम। अ से अनार, बड़े आ से आम, आम-अनार, अनार-आम, छोटे अ से अनार...।

बाप : (एक अभिनेता अठता है बाप के अभिनय में) मुन्नी... मुन्नी... कहां गई तू। तुझे चिलम भरने को दी थी। अब तक नहीं लौटी।

औरत : (पास आते हुए) अ से अनार, आ से आम।

बाप : क्यों री, यह घर है या स्कूल... चिलम भर दी? घंटा भर हो गया काम से आए। कब तक मैं यूं ही बैठा रहूंगा?

चित्रांकन
दिया थापर

औरत : मैं पाठ याद कर रही थी। मास्टर जी कहते हैं घर में पढ़ा करो। समझ न आए तो अपने बाबा से पूछो।

बाप : बाबा से पूछो! बाबा से पूछो तो घर बैठो और काम करो। क्या करेगी स्कूल जा के? तुझे कौन दफ़्तर जाना है?

औरत : मास्टर जी कह रहे थे , कल किताब ज़रूर लाना, नहीं तो नाम काट देंगे। कह रहे थे, स्कूल की वर्दी धुली हुई होनी चाहिए। इंस्पेक्टर आने वाले हैं।

बाप : हरामज़ादों को बच्चों का मन बहलाने के सिवा कोई काम है? यहां दो जून को दाने नहीं हैं घर में। बरसात आने वाली है और छप्पर अभी तक ठीक नहीं करा पाए। इन्हें धुली वर्दी चाहिए! कल से स्कूल बंद।

औरत : नहीं बाबा, मैं स्कूल जांऊगी...।

बाप : घर का काम किया कर... दस साल की होने को आई। ढोंग की ढोंग स्कूल जाएगी... हूं। कुछ काम ढूंढ दूंगा तेरे लिए। यह आवारों की तरह उछल-कूद बंद कर।

औरत : बाबा, एक रस्सा ला दो, शाम को खेलने के लिए...।

बाप : यही तो आफ़त है। बच्चों को स्कूल भेजना ही नहीं चाहिए। पढ़ाई के साथ स्कूल एक बला हो तो...।

औरत : रस्सा ला दो बाबा, रस्सा...।

बाप : गले में लटका के मर क्यों नहीं जाती, कम्बख्त? तेरी मां मर रही है। तू भी मर, पीछा छूटेगा। लड़का है, किसी तरह पाल लूंगा। कहां से लाऊं तेरे लिए रस्सा? तनख्वाह के नाम से पिछले 5 साल से एक पैसा नहीं बढ़ा। बढ़ाने की बात भी की तो सालों ने तालाबंदी की धमकी दे दी और एक तरफ़ ये हैं... किताब चाहिए, खिलौने चाहिएं। चल, उठकर बासन मांज। हरामजादी कहीं की, स्कूल जाएगी।

औरत : जाऊंगी, जाऊंगी! सुबह-सुबह सारे बच्चे सुंदर कपड़े पहनकर बस में बैठकर जाते हैं। मैं भी जाऊंगी।

बाप : उन बच्चों की जितनी फ़ीस है उतनी तेरे बाप की पगार है। चल उठ और लाला से जाकर आटा ले आ।

औरत : बाबा, वह आटा नहीं देता।

बाप : उसकी साले की... उधार देता है, कोई भीख नहीं देता।

औरत : पर बाबा, उसका बेटा कहता है...।

बाप : क्या कहता है?

औरत : कहता है... कहता है... अगर उधार में आटा चाहिए तो दुकान बंद होने के बाद अकेले में आना।

बाप : सुअर का बच्चा! अगर उधार न चुकाना होता...।

(बाप और औरत दोनों अपनी मुद्रा में 'फ्रीज' हो जाते हैं।)

(अगले अंक में जारी)